डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 07-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद में देवभावना का विकास

यद्यपि ऋग्वेद की देवभावना स्वयं में प्राचीन है, तथापि इसमें कुछ ऐसे देवता भी है जिनकी धारणा और भी अधिक प्राचीन है। इस रूप में, ऋग्वेद की देवभावना के विकास को हम चार कालों में विभाजित कर सकते हैं-

1. इण्डो-यूरोपियन काल की देवभावना

वस्तुतः देवत्व की सामान्य धारणा इसी काल से संबंध रखती है। सर्वप्रथम इसी काल में द्यौः को पिता के रूप में देखा गया था।

2. इण्डो- ईरानियन काल की देवभावना

यह सभी विद्वान् जानते हैं कि ईरान की प्राचीन भाषा, अवेस्तन भाषा और वैदिक भाषा में बहुत अधिक समानता है । इनके उच्चारण में भिन्नता होने से ही ये भिन्न भिन्न दृष्टिगोचर होती है। भाषा की भांति ईरानी देवों और वैदिक देवों में भी बहुत अधिक समानता है। ईरानी देवता 'मिथ' श्र और 'इम' वैदिक देवता 'मित्र' और 'यम' से समानता रखते हैं।

3. इण्डो- आर्यन काल की देवभावना

इस काल में भारतीय आर्यों अर्थात वैदिक आर्यों ने देवताओं को तीन रूपों में देखा है

१. द्युलोक में रहने वाले देवता
२. अंतरिक्ष में रहने वाले देवता
३. पृथ्वी पर रहने वाले देवता।

सूर्य द्युलोक का देवता है; विद्युत, वर्षा और वायु अंतरिक्ष के देवता है तथा अग्नि पृथ्वी का देवता है।

ऋग्वेद के सूक्तों में देवताओं का विकास क्रमिक रूप में दृष्टिगोचर होता है । यहां प्राकृतिक शक्तियां धीरे-धीरे देवताओं का रूप ग्रहण करती हुई दिखालायी पड़ती है। वैदिक आर्य जिस प्राकृतिक वातावरण में रहते थे, जिन

प्राकृतिक घटनाओं को देखते थे और जिन प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करते थे, उन्हीं सबको वैदिक आर्यों ने अपना देवता स्वीकार किया है । उन्हीं की स्तुति ऋग्वेद के सूक्तों में स्थान -स्थान पर किया गया है ।

संक्षेप में वैदिक देवताओं का विकास इस रूप में हुआ है -

A. मानवीकृत देवता

वस्तुतः देवभावना के विकास के इस प्रारंभिक काल में वैदिक आर्य प्रकृति के अति निकट संपर्क में रहते थे । इनके अधिकांश देवता इनकी सहज जिज्ञासा एवं सरल स्वभाव के ही परिणाम है । इनके द्वारा देखे गए प्राकृतिक तत्व सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, विद्युत, वर्षा, आदि ही देवता आगे चलकर इनके सूर्य देवता, चंद्र देवता, अग्नि देवता, मरुत देवता आदि बन गए। आगे चलकर पुराण काल में प्राकृतिक दृश्यों के मानवीकरण के इस मूल तथ्य को भुला दिया गया और देवताओं को भी उच्च शक्ति संपन्न मानवाकृति के रूप में ही देखा जाने लगा । परिणामस्वरुप इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण, विष्णु, अदिति और रूद्र आदि को मानवाकृति में देवता माना जाने लगा।

B. विशेषणों के आधार पर बने देवता

वैदिक देवताओं में कुछ ऐसे भी देवता है जो पहले किसी प्राकृतिक तत्व के विशेषण थे किंतु बाद में वे स्वतंत्र रूप में देवता बन गए। सविता देवता और विवस्वान् देवता, यह दोनों ही पहले सूर्य के विशेषण थे, सूर्य को ही प्रेरक (सविता) और चमकीला (विवस्वान्) कहा जाता था। बाद में, सूर्य के साथ ही साथ, सविता और विवस्वान् भी देवता बन गए।

C. जाति भेद से देवता भेद

प्राकृतिक शक्ति से विकसित एक ही देवता अलग-अलग जातियों में अलग-अलग नामों से जाना गया। प्राकृतिक सूर्य ही पहले एक विशेष जाति का' पूषन्' देवता था। बाद में ऋग्वैदिक देवताओं में यही मार्गों का देवता माना गया। इस प्रकार एक ही देवता के दो नाम हो जाने से देवताओं में वृद्धि हो गई।

इसी प्रकार सूर्य आगे चलकर मित्र (अवेस्तन मिश्र) के रूप में एक स्वतंत्र देवता बन गया ।

D. भावात्मक देवता

प्राकृतिक दृश्यों के मानवीकरण की भांति ही कुछ देवता ऐसे भी हैं जो मानव भावनाओं के मानवीय करण हैं। जैसे - काम, मन्यु, श्रद्धा आदि।

E. निम्न कोटि के देवता

कुछ योनियां -विशेष अपने आश्चर्यजनक कार्यों के ही कारण देवताओं में परगगणित हो गयी है । जैसे -ऋभु, अप्सराएं तथा गंधर्व आदि।

F. उपकरण रूप में देवता

ऋग्वेद में कुछ ऐसे देवता भी है, जो मानव जीवन में उपयोगी वस्तुओं के ही देव रूप है, जैसे- यज्ञ-यूप, उलुखल-मुसल, ग्रावन् आदि।

इस प्रकार वैदिक देवभावना का विकास प्राकृतिक तत्वों से लेकर के मानवों से बनायी गयी वस्तुओं तक विकसित हुआ दृष्टिगोचर होता है।